

गीदड गीदड है और शेर शेर

एक जंगल में शेर-शेरनी का युगल रहता था। शेरनी के दो बच्चे हुए। शेर प्रतिदिन हिरणों को मारकर शेरनी के लिये लाता था दोनों मिलकर पेट भरते थे। एक दिन जंगल में बहुत घूमने के बाद भी शाम होने तक शेर के हाथ कोई शिकार न आया। खाली हाथ घर वापिस आ रहा था तो उसे रास्ते में गीदड का बच्चा मिला।

बच्चे को देखकर उसके मन में दया आ गई; उसे ज़िन्दा ही अपने मुख में सुरक्षा-पूर्वक लेकर वह घर आ गया और शेरनी के सामने उसे रखते हुए बोला- "प्रिये ! आज भोजन तो कुछ मिला नहीं। रास्ते में गीदड का यह बच्चा खेल रहा था । उसे जीवित ही ले आया हूँ। तुझे भूख लगी है तो इसे खाकर पेट भरले। कल दूसरा शिकार लाऊँगा।" शेरनी बोली- "प्रिय ! जिसे तुमने बालक जानकर नहीं मारा, उसे मारकर मैं कैसे पेट भर सकती हूँ ! मैं भी इसे बालक मानकर ही पाल लूँगी । समझ लूँगी कि यह मेरा तीसरा बच्चा है।"

गीदड का बच्चा भी शेरनी का दूध पीकर खूब पुष्ट हो गया। और शेर के अन्य दो बच्चों के साथ खेलने लगा। शेर-शेरनी तीनों को प्रेम से एक समान रखते थे।

कुछ दिन बाद उस वन में एक मत्त हाथी आ गया। उसे देख कर शेर के दोनों बच्चे हाथी पर गुर्राते हुए उसकी ओर लपके। गीदड के बच्चे ने दोनों को ऐसा करने से मना करते हुए कहा- "यह हमारा कुलशत्रु है। उसके सामने नहीं जाना चाहिये। शत्रु से दूर रहना ही ठीक है।"

यह कहकर वह घर की ओर भागा। शेर के बच्चे भी निरुत्साहित होकर पीछे लौट आये । घर पहुँच कर शेर के दोनों बच्चों ने माँ-बाप से गीदड के बच्चे के भागने की शिकायत करते हुए उसकी कायरता का उपहास किया। गीदड का बच्चा इस उपहास से बहुत क्रोधित हो गया। लाल-लाल आंखें करके और होठों को फडफडाते हुए वह उन दोनों को जली-कटी सुनाने लगा। तब, शेरनी ने उसे एकान्त में बुलाकर कहा कि- "इतना प्रलाप करना ठीक नहीं, वे तो तेरे छोटे भाई हैं, उनकी बात को टाल देना ही अच्छा है।"

गीदड का बच्चा शेरनी के समझाने-बुझाने पर और भी भडक उठा और बोला- "मैं बहादुरी में, विद्या में या कौशल में उनसे किस बात में कम हूँ, जो वे मेरी हँसी उडाते हैं; मैं उन्हें इसका मजा चखाऊँगा, उन्हें मार डालूँगा।"

यह सुनकर शेरनी ने हँसते-हँसते कहा- "तू बहादुर भी है, विद्वान् भी है, सुन्दर भी है, लेकिन जिस कुल में तेरा जन्म हुआ है उसमें हाथी नहीं मारे जाते। समय आ गया है कि तुझ से सच बात कह देनी चाहिये। तू वास्तव में गीदड का बच्चा है। मैंने तुझे अपना दूध देकर पाला है। अब इससे पहले कि तेरे भाई इस सचाई को जानें, तू यहाँ से भागकर अपने स्वजातियों से मिल जा। अन्यथा वह तुझे जीता नहीं छोड़ेंगे।" यह सुनकर वह डर से काँपता हुआ अपने गीदड दल में आ मिला।

गीदड गीदड रुठोर मरे मरे

एक एंगल भेरे-मरेनी का बगल रुठु घा। मरेनी क देवेपुङ्गा मरे पुठिदिन फिर...के
भारकर मरेनी क लिबलाउ घा एनेभिलकर पर हरउ घोरक दिन एंगल भेरुडु अभन के
गद ही माभ रुने उेक मरे क लाघ करे मिकार न मुया। पाली लाघ अर वापिम मु रुका घा उे
उम रेभुभेगीदड का मण्डुभिला।

मण्डुके देपिकर उमक भेन भेरे घा मु गरं; उम एण्डु की मपन भूप भेरेला-पत्रक लकेर वरु
अर मु गघा ठर मरेनी क भाभन उम रोपउ रुए गले- "पिय! मुए रुएन उ केकु भिला नली।
रभुभेगीदड का वरु मण्डुपले रुका घा। उम एण्डु की ल मुया रु उरु ह्यु लगी रु उे उम
पाकर पर हरलाकेल एभरा मिकार लाउगी।"

मरेनी गले- "पिय! एभ उेभन गेलक एनकर नली भारा, उम भारकर भकेमे परे हर मकडी
रु भेही उम गेलक भानकर की पाल लगी। मभर लगी कि वरु भरा डीभरा मण्डुका।"

गीदड का मण्डुही मरेनी का एण पीकर एव पपुलु गेघा। ठर मरे क मेन ए देवेपुङ्गे भाघ पलेन
लगा। मरे-मरेनी डीन के धेमे मरेक मभान रापउ घा।

रुकु दिन गद उम वन भोरक भडुलाही मु गघा। उम देपे कर मरे क देवेपुङ्गाही पर
गरुउ रुए उमकी ठर लपकागीदड क देवेपुङ्गे देवे के रिभा करन मेभन करउ रुए कला-
"वरु रुभारा कलुमडु रु उमक भाभन नली एन एण्डुमडु म एर रुका की ठीक का
वरु ककर वरु अर की ठर हागा। मरे क देवेपुङ्गी निरुअुकिउ रुकेर पीळ लेए मुया।"

अर परुण कर मरे क देवेपुङ्गे भेगिप मगीदड क देवेपुङ्गे हागन की मिकाघउ करउ रुए
उमकी काघरउ का उपकाम किया। गीदड का मण्डु उम उपकाम भेरुडु कूणउ रु गेघा।
लाल-लाल गुंफ केरक ठर रुके के देरुदरुउ रुए वरु उन देवे के एली-कपी मजान लेगा। उम,
मरेनी न उेभरेका नुभेलाकर कला कि- "उउन पलाप करन ठीक नली, वउउेरे केरे हां रु,
उनकी गउ क एल देवे की मण्डुका।"

गीदड का मण्डुमरेनी क मेभान-गेणन पर ठर ही रुक उा ठर गले- "भरेकाएरी भ,
विष्ट भेघा केमल भउनम किम गउ भकेम रु, ए वेभरी रुभी उरुउ रु, भउन उमका भए
एण्डुगी, उनभार लली।"

वरु मजकर मरेनी न रुभेउ-रुभेउ केला- "उरुकाएरी ही रु, विष्टना ही रु, भेरु ही रु, लेकिन
एभ कलु भउरा एनरुमु रु उेभभेकाही नली भार एउेभभघ मु गघा रु कि उरु मभेए गउ
कर देवी एण्डुमडु रुभेगीदड का मण्डुका भेरे उरु मपन एण देकेर पाला रुभे उमभ
परुल कि उे हां उम मारां क एन, उरुका भे हागकर मपन मेदुडिबभेभिल ए। मवभु वरु
उरु एण्डु नली रुकेगी।"

वरु मजकर वरु हर मकेपेउ रुमु मपन गीदड एल भेमु भिला।